

विघन विनाशत विघन हरत गणपति श्री गणेश

हरी ॐ

ईक औंकार को सिमरिऐ, मिट जाए सभी कलेश,
विघन विनाशत विघन हरत गणपति श्री गणेश ॥

भगवती संग पुजिऐ श्री बहामा विषणु महेश,
गुरु दासों का दास हूँ मोरे अंग संग रहो हमेश ॥

सरस्वती स्वर दिजिऐ स्वर के साथ जान,
मै बेसुर बेताल हूँ मैय्या आप करो कल्याण ॥

मोरी रखियो लाज गुरु देव देव,
मोरी रखियो लाज गुरु देव -॥

बाबे मेरे हाल दा महरम तु,
अंदर तु है बाहर तु है मेरे रोम रोम विच तु ॥
तु ही ताना तु ही बाना,
सब किछ मेरा तु वे सांईया सब किछ मेरा तु ॥
कह हुसेन फकिर सांई दा, मै नाहीं सब तु ॥

ख्वाजा जी महाराजा जी -॥ तुम बनो गरीब निवास,
अपना कर के राखियो तोहे बाहं पकडे की लाज ॥

रह मन संसार मे सबसे मिलिऐ ध्याऐ,
ना जाने की भेस मे मोहे नारायण मिल जाए ॥

जान ध्यान कुछ कर्म ना जाना सार ना जाना तेरी,
सबसे वडा धन सतगुरु नानाक जिन कल राखि मेरी ॥

जे मै वेखा अमला वले कुछ नहीं पले मेरे,
जे मै वेखां तेरी रहमत वले बल्ले बल्ले ॥
हरी ॐ.....

<https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/3066/title/vidhan-vinashat-vidhan-harat-ganpati-shri-ganesh>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |